Postal Regd. MP/BHOPAL/244/21-23 *'ANASUYA' RNI-Regd. No. 45134/86*

पृष्ठ संख्या-12/प्रति अंक मूल्य - 4/-रु.
वार्षिक चन्दा 100/- रु. मात्र
आजीवन सदस्यता शुल्क : 700/-
प्रकाशन तिथि/पोस्टिंग तिथि : 16 मई 2021

फिर से वही डर ... रोज़गार और जीवन दाँव पर

अनसूया

आद्य-संपादक : ज्योत्स्ना मिलन
संपादक : प्रीति शान्त

वर्ष : 36 अंक :14 मई 2021

कोविड की दूसरी लहर

भीतर

3. हालात चाहे जितने खराब हों ...
5. बहनों को काम से जोड़ा ...
6. मुश्किल समय में छोटी-सी मदद ...
10. पशुसखी बहनों की आय में ...

बिहार में कोरोना के बढ़ते संक्रमण के कारण सभी का जीवन अस्त-व्यस्त हो गया है। बिहार में इस महामारी ने भयानक रूप ले लिया है। कोरोना संक्रमण ने एक बार फिर हम सबको को उसी स्थिति में धकेल दिया है, जहाँ हम एक साल पहले थे। कोरोना की दूसरी लहर ने पूरे राज्य में शहर से लेकर गाँव तक स्थिति को चिंताजनक बना दिया है।

बिहार में कोरोना तेजी से बढ़ने लगा है। इस बढ़ते संक्रमण को रोकने के लिए 'सेवा' ने क्षेत्र की आगेवान बहनों को अपनी सुरक्षा करने एवं दूसरों को इस वायरस से कैसे बचाएँ -इसका प्रशिक्षण देकर अपने क्षेत्र में जागरूकता फैलाने की बात कही। सभी को समझाया गया है कि हमें आपस में दो गज की दूरी बनाए रखनी है। अपने हाथों को साबुन से बार-बार धोना या सेनीटाइज़ करना है। बाहर निकलने पर मास्क का इस्तेमाल अनवार्य तौर पर करना है।

'सेवा' की बहनें अपने क्षेत्र में जाकर कोविड वैक्सीन की जानकारी दे रही हैं और अपने क्षेत्र में आँगनबाड़ी केन्द्र में कोविड के कैम्प में बहनों को ले जाकर वेक्सीनेशन भी करा रही हैं।

कोरोना काल का काला साया जिले के विकास का रास्ता रोक रहा है। जिससे समाज का हर क्षेत्र और हर तबका प्रभावित हो गया है। इसकी कीमत लोगों को आर्थिक तंगी व पीड़ा झेलने के साथ ही कई बार जान गंवाकर चुकानी पड़ रही है। लोग दो वक्त की रोटी जुटाने में लगे हैं। कोरोना वायरस के कहर ने रोज़ कमाने-खाने वाले मजदूरों को एक बार फिर से संकट की स्थिति में डाल

दिया है। उनका रोज़गार बंद हो गया है, सुबह से शाम तक काम करने के बाद जो मजदूरी मिलती थी उससे राशन लाकर रात में घर का चूल्हा जलता था लेकिन कोरोना की दूसरी लहर ने इन गरीबों का रोज़गार एक बार फिर से छीन लिया।

जिले में तेजी से फैल रहे दोहरे म्यूटेशन वाले वायरस संक्रमण की जड़ अधिकांश क्षेत्रों में फैल चुकी है। यहाँ ***स्वास्थ्य विभाग के आंकड़े के मुताबिक 5000 मरीज संक्रमण के शिकार हो गए हैं।*** सरकारी अस्पताल में जाँच के लिए लंबी-लंबी लाइनें लगी रहने के बावजूद ना ही रिपोर्ट मिलती है और ना ही कोई दवाई मिलती है। लोग निराश घर वापस लौट जाते हैं। जो लोग अस्पताल में एडमिट हैं, जिनको ऑक्सीजन की जरूरत है उन्हें ऑक्सीजन नहीं मिल पा रही है, इस वजह से कई लोगों ने जान गंवा दी है। ***बिहार में डॉक्टर्स की कमी हो गई है।*** प्राइवेट डॉक्टर भी मरीज का इलाज करने में डर रहे हैं क्योंकि कुछ डाक्टर्स की भी कोरोना वायरस के कारण मृत्यु हो गई है।

बीबी भोली पति मो. हीरू उम्र 58 वर्ष, घर बरेहपुरा, पोस्ट भिखनपुर-सिलाईकाम करती हैं। उनके चार बच्चे हैं। उन्हें कुछ दिन खांसी और बुखार आया तो उनको शंका हुई कि कहीं वे कोरोना संक्रमित तो नहीं हैं। अपनी

शंका को दूर करने के लिए उन्होंने अपनी जांच करवाई। उनकी रिपोर्ट कुछ दिन बाद आई और इस बीच उनकी तबीयत ज्यादा बिगड़ने लगी। उनको अस्पताल लेकर गए। जाँच में पता चला कि उनका ऑक्सीजन लेबल कम हो गया था। तब उन्हें तुरंत ऑक्सीजन लगाया गया। अभी उनका इलाज चल रहा है लेकिन वे पहले से काफी ठीक हैं।

बीबी हसीना पति मो. अब्बास उम्र 55 वर्ष, घर तबलपुर थाना लोदी की रहने वाली हैं। उनके 6 बच्चे हैं। उनके पति घर में कागज का छोटा-सा बिजनेस करते थे और बीबी हसीना पापड़ बेलती थीं। उन्हें एक दिन बुखार आया लेकिन उन्होंने यह सोचकर ध्यान नहीं दिया कि शायद मौसम बदलने की वजह से बुखार आया हो। वे घरेलू उपचार करने लगीं लेकिन उनकी तबीयत दिन प्रतिदिन खराब होती देखकर जब उनकी कोविड की जांच कराई गई तो वे पॉजीटिव निकलीं। दो-तीन दिन में उनकी हालत ज्यादा खराब होती देखकर डॉक्टर ने उन्हें कलकत्ता रेफर कर दिया। जब वे कलकत्ता गईं तो डॉक्टर ने बताया कि अब इन्हें घर में ही रखकर देखभाल करें क्योंकि इनकी किडनी में इन्फेक्शन फैल गया है। पाँच दिन के बाद हसीना बहन की मृत्यु हो गई। अब उनका पूरा परिवार होम क्वारेंटाइन रहकर अपनी हिफाजत कर रहा है।

-माधुरी सिन्हा,
महामंत्री-'सेवा' बिहार

हालात चाहे जितने भी खराब हों हमें हिम्मत नहीं हारना है...

कोरोना की दूसरी लहर की भयावह स्थिति के बारे में जब आगेवान ***रेखाबहन*** से चर्चा की गई तो उन्होंने बताया कि, नेहरूनगर, हरिजन कॉलोनी क्षेत्र में कोरोना की वजह से बहनों का काम छूट गया है। रोज कमाने-खाने वाली सदस्य बहनों को बहुत परेशानी हो रही है। कुछ सदस्य बहनों को ना सही से राशन मिल पा रहा है और ना ही सही से इलाज हो पा रहा है इसलिए ये सभी बहनें काफी परेशान हैं।

अभी हम कोरोना के कहर से निजात भी नहीं पा पाए थे कि कोरोना की दूसरी लहर ने चारों ओर त्राहि-त्राहि मचा दी। इस समय किसी को कुछ समझ में नहीं आ रहा है कि क्या किया जाए? हर तरफ भेड़-बकरियों की तरह इंसान कोरोना की बलि चढ़ रहे हैं। चारों तरफ मौत का मातम मचा हुआ है। इस स्थिति में हमने अपनी बहनों से कहा कि हालात चाहे जितने भी खराब हों हमें अपनी हिम्मत को नहीं हारने देना है। हमें एक-दूसरे को जागरूक करना है इसलिए सभी बहनें कोई भी जानकारी मिलने पर एक-दूसरे के साथ साझा कर रही हैं। आगेवान एवं कार्यकर्ता बहनों के द्वारा सदस्य बहनों को छोटी-छोटी बात को फोन के द्वारा समझाया जा रहा है कि हमें किस तरह सावधानी बरतनी है। बहनों को बिना मास्क एवं बिना काम के बाहर जाने के लिए मना किया जा रहा है। सभी आगेवान बहनें अपने-अपने क्षेत्र के लोगों से विनती कर समझा रही हैं एवं आपस में कम से कम 1 मीटर की दूरी से बात करने की सलाह दे रही हैं। बहनों को सर्दी-जुकाम होने पर तुलसी के पत्ते, काली मिर्च, लौंग, दालचीनी आदि का काढ़ा बनाकर पीने की सलाह दी जा रही है।

इस समय चारों ओर हाहाकार मचा हुआ है और ***हमें एक-दूसरे की ढाल बनकर इस कठिन स्थिति का सामना करना है, एक-दूसरे की मदद करनी है।*** कहीं-कहीं तो डॉक्टर इलाज भी नहीं कर रहे हैं। ऑक्सीजन की कमी के कारण लोगों की मौत हो रही है। इस समय बहनों को आगेवान एवं कार्यकर्ता बहनों के द्वारा लौंग, दालचीनी एवं कपूर की पोटली बनाकर हर समय अपने पास रखने एवं थोड़ी-थोड़ी देर में उसे सूंघने की सलाह भी दी जा रही है ताकि ऑक्सीजन की कमी ना हो। इसके साथ ही नींबू और गर्म पानी पीने की सलाह दी जा रही है। बहनों को समझाया जा रहा है कि इस कोरोना काल के समय जहाँ हर तरफ लॉकडाउन है वहाँ हम घरेलू उपचार एवं सावधानी बरतकर सुरक्षित रह सकते हैं। हमें एक-दूसरे की मदद से पीछे नहीं हटना है क्योंकि हमें बीमारी से लड़ना है, बीमार से नहीं।

जैसा कि, हम सब अभी जिस परिस्थिति का सामना कर रहे हैं यह हमारे लिए बहुत दुखद एवं संकट की घड़ी है। हमें बहुत सावधानी से रहना है। दानापुर के मुबारकपुर में 'सेवा' निरंतर क्षेत्र के भाई-बहनों को जागरूक करने का काम कर रही है। 'सेवा' के द्वारा जमीनी अधिकार अभियान की टीम भी मुबारकपुर में काम करती है। ***इस विकट समय में कोई किसी की मदद करना तो दूर की बात है, बात करना भी नहीं चाहता लेकिन इस समय भी 'सेवा' के कार्यकर्ता और आगेवान बहनों ने अपने हौसले को बरकरार रखा है।*** भले ही वे एक जगह सामूहिक मीटिंग नहीं कर रही हैं लेकिन जो भी जागरूकता की बातें हों वे सभी बहनों को फोन के द्वारा बता रही हैं, जैसे कि, उस क्षेत्र के भाई एवं बहन को समझाती हैं कि बेवजह घर से बाहर ना निकलें। यदि बाहर जाना आवश्यक हो तो मास्क का उपयोग जरूर करें। साफ-सफाई का ध्यान रखें। थोड़ी-थोड़ी

देर में साबुन से हाथ धोएँ। कम से कम 2 गज की दूरी बना कर रहना है। इसके साथ ही आगेवान एवं 'सेवा' के कार्यकर्ता द्वारा बहनों की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए काढ़ा पीने की सलाह भी दी जा रही है।

मंदिरी आगेवान ***मिंताबहन*** तथा ***रेनूबहन*** का कहना है कि, कोरोना का कहर दिन पर दिन बढ़ता जा रहा है। हम मंदिरी में रहते हैं जो बांस घाट के पास पड़ता है। बांस घाट ऐसा घाट है जहाँ कोरोना के कारण मरे व्यक्ति का अंतिम संस्कार किया जाता है। यहाँ अंतिम संस्कार के लिए लंबी लाइन लगी रहती है। मंदिरी में भी कुछ लोग कोरोना का शिकार हुए हैं। यहाँ की स्थिति काफी दयनीय है। लोग घर से बाहर नहीं निकल रहे हैं। क्षेत्रों को पुलिस द्वारा सील कर दिया गया है। फिर भी हमारी आगेवान बहनें फोन के द्वारा बहनों को समझा रही हैं कि हमें कोरोना से कैसे बचना है और किस तरह कोरोना को हराना है।

शीलाबहन मुबारकपुर के बीजापत में रहती हैं। उनकी तबीयत पिछले कुछ दिनों से बहुत खराब है। उनसे फोन द्वारा बातचीत के दौरान पता चला कि उन्हें साँस लेने में भी काफी परेशानी हो रही है। इस समय कोरोना के बढ़ते कहर के कारण डॉक्टर भी नहीं अपनी क्लिनिक में नहीं मिल रहे हैं। तब एक कॉन्फ्रेंस कॉल के द्वारा आगेवान एवं कार्यकर्ता के द्वारा उन्हे घरेलू उपाय के बारे में बताया गया। उनको कपूर, लौंग और अजवाइन की पोटली बनाकर बार बार सूंघने की सलाह दी गई। शीलाबहन ने सलाह पर अमल किया जिससे उनकी हालत में सुधार हुआ।

शान्तिनगर की ***लालपरीबहन*** से बातचीत करने पर पता चला कि शान्तिनगर की एक-दो बहनों ने कोरोना की वैक्सीन लगवाई थी जिसके बाद उनकी तबीयत खराब हो गई। यह जानने के बाद उस क्षेत्र के भाई-बहन टीका लगवाने से परहेज करने लगे। इसकी जानकारी लालपरी बहन ने दूसरी आगेवान बहन को दी। फिर उन्होंने मिलकर सावधानी बरतते हुए डोर-टू-डोर जाकर बहनों को समझाया कि टीका लगने के बाद बुखार, सिरदर्द या हाथ में दर्द होता है जो जल्दी ही ठीक भी हो जाता है इसलिए इससे डरने की जरूरत नहीं है। इस तरह इन दोनों बहनों ने क्षेत्र के लोगों

को टीका लगवाने के प्रति जागरूक किया।

नेहरू नगर के मैनपुरा में रहने वाली 'सेवा' की सदस्य ***मालाबहन*** से बात हुई तो उन्होंने बताया कि, मैनपुरा की स्थिति भी कोरोना की वजह से खराब चल रही है। हमारी सदस्य बहनें जो घरेलू कामगार थीं उनमें से कुछ बहनों का काम छूट गया है, कुछ ही बहनें काम पर जा रही हैं। पूरे बिहार में लॉकडाउन लग चुका है। यहाँ दुकानें 7:00 बजे से लेकर 10:30 बजे तक ही खुलती हैं उसमें भी साग-सब्जी की दुकानें खुलती हैं। मेडिकल की भी कुछ ही दुकानें खुलती हैं बाकी सारी दुकानें बंद रहती हैं। अधिकतर घरों में बूढ़े-बच्चे बीमार पड़ रहे हैं। उन्हें देने के लिए सही से दवा भी नहीं मिल पा रही है। सभी लोग खौफ में जी रहे हैं कि आगे क्या होगा? ऐसी स्थिति होने के बावजूद भी आगेवान तथा कार्यकर्ता निरंतर मोबाइल के द्वारा फॉलोअप कर रही हैं और आगेवान तथा सदस्य बहनों से बातचीत कर रही हैं। उन्हें आश्वासन दे रही हैं कि सब ठीक होगा, आप लोग डरे नहीं, हिम्मत से रहिए। हम लोग आपके साथ हैं। जो लोग बीमार हैं उनके उपचार के लिए कुछ उपाय भी बताए जा रहे हैं जिन्हें घर में किया जा सकता है। बहनें इन उपायों को स्वयं आजमा रही हैं और दूसरों को भी बता रही हैं।

-पूनम पांडेय,
प्रोजेक्ट को-ऑर्डिनेटर

बहनों को काम से जोड़ा...

कोरोना वायरस के खतरे ने दुनिया को तमाम राष्ट्रों की सभी सीमाओं को पार करते हुए लोगों को अपने शिकंजे में ले लिया है। दुनिया के कई देशों ने आकस्मिक खतरों से निपटने के लिए हथियारों के ज़खीरे तैयार कर रखे थे, वह सबके सब इस कोरोना वायरस के आगे धरे-के-धरे रह गए। जैसा कि कहा जा रहा है कि लॉकडाउन के दौरान कृषि क्षेत्र और इससे जुड़े कुछ और जरूरी क्षेत्रों व ई-कॉमर्स में थोड़ी-बहुत ढील दी जाएगी। लेकिन कोरोना वायरस ने देश के हर शहर, हर गाँव में संकट खड़ा कर दिया है। कई गाँवों में अस्पताल नहीं हैं तो कई गाँव के लोगों को इस बीमारी के बारे में ज्यादा जानकारी ही नहीं है। इससे बचने के लिए टेस्टिंग और टीका दोनों बहुत आवश्यक हैं लेकिन कई गाँवों में देखा जा रहा है लोग टीका लगवाने से बच रहे हैं।

इस महामारी के कारण असंगठित क्षेत्र में काम करने वाले दिहाड़ी मजदूर, मजदूरी के लिए शहरों में पलायन करने वाले मजदूर और शहरों में सड़क के किनारे छोटा-मोटा व्यापार करके आजीविका चलाने वाले लोगों की स्थिति बहुत गंभीर है। आय बंद, खाना बंद वाला हाल हो गया है। इस दौरान 'सेवा' कटिहार की कार्यकर्ता बहनें लगातार प्रयास कर रही हैं कि किसी तरह गाँव की सदस्य बहनों तक मदद पहुँचाई जा सके। दूसरे एनजीओ एवं संस्थाओं से भी मदद लेकर गाँव में मास्क एवं मेडिसिन किट पहुँचाये जा रहे हैं। गाँव के मुखिया, सरपंचों से संपर्क करके बहनों एवं भाइयों को वीडियो द्वारा टीकाकरण के लिए जागरूक करना, मास्क के लिए जागरूक करना, कोरोना वायरस से बचने के लिए क्या सावधानी रखना चाहिए इसकी जानकारी देकर सभी लोगों को जागरूक किया जा रहा है। गाँव के लोग टीका लगवाने में हिचकिचाते हैं, उनको समझाया जा रहा है ताकि वे टीका लगवाने के लिए तैयार हो जाएँ। इसके अलावा, मुखिया को यह सुझाव भी दिया गया है कि जिन लोगों के पास राशन कार्ड नहीं हैं उन लोगों को आधार कार्ड के द्वारा राशन दिया जाये।

हमारी सदस्य ***सुमित्रा देवी***, पति दिनेश पासवान-के चार बच्चे हैं दो बेटे और दो बेटियाँ। सुमित्राबहन के पति सड़क किनारे बैठकर कपड़ा बेचते थे लेकिन कोरोना से हालात इतने गंभीर हो गये कि अब कपड़ा बेचना बंद कर दिया है। अभी कोई दूसरा काम मिल भी नहीं रहा है इसलिए घर का खर्च चलाना मुश्किल हो रहा है। सुमित्राबहन के साथ उनकी सासुमां भी रहती हैं। उनकी उम्र ज्यादा है और वे अक्सर बीमार रहती हैं। सुमित्राबहन बहुत चिंता में थीं कि अब घर कैसे चलेगा? 'सेवा' के प्रशिक्षण केंद्र से सुमित्राबहन ने सिलाई का प्रशिक्षण लिया था, उन्होंने 'सेवा' में फोन करके बताया कि उनको काम की बहुत जरूरत है। इस समय सभी एनजीओ व जीविका वाले गाँव एवं शहर में मास्क वितरण का काम कर रहे हैं और 'सेवा' के पास जीविका की तरफ से मास्क बनाने का काम आया था कि अगर 'सेवा' की कोई बहन सिलाई जानती है और मास्क बनाने की इच्छुक है तो संपर्क करे। 'सेवा' से सुमित्राजी का मोबाइल नंबर दे दिया गया और उनको मास्क बनाने के संबंध में फोन भी आ गया। सुमित्राबहन ने काम के लिए तुरंत हाँ कह दिया और उनको काम मिल गया। अब वे घरबैठे मास्क बनाती हैं और जो पैसा मिलता है उसी से घर का खर्च चला रही हैं। इस काम में उनके पति भी मदद करते हैं। वे दोनों मिलकर अच्छा कमा लेते हैं। सुमित्राबहन की चिंता दूर हुई कि अब उनकी सासुमां और बच्चों को भूखा सोना नहीं पड़ेगा।

गुड़ियाबहन बहुत ही मेहनती एवं ईमानदार

हैं। उनकी शादी बचपन में ही हो गई थी। जब वे 10 साल की थीं तब उनकी माँ का देहांत हो गया। पिताजी गरीब थे इसलिए उनकी जल्दी शादी कर दी। जब गुड़ियाबहन की उम्र 16 साल की थी तब उनके पति का भी देहांत हो गया। वे ससुराल छोड़कर पिताजी के पास वापस आ गईं। तब से मेहनत करके गुजर-बसर कर रही हैं और साथ-ही-साथ अपने पिताजी की देखरेख भी करती हैं। उन्होंने 'सेवा' में सिलाई का प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद एक सिलाई मशीन खरीद ली थी। वे दूसरे के कपड़ों की सिलाई कर लेती हैं और बीच-बीच में मजदूरी करने भी चली जाती हैं। अभी मास्क सिलाई का काम चल रहा है तो गुड़ियाबहन ने तुरंत 'सेवा' की बहनों से संपर्क किया और काम की मांग की। तब सुमित्राबहन की तरह गुड़ियाबहन को भी 'सेवा' की कार्यकर्ता बहन ने एनजीओ से बात करके काम पर लगा दिया। गुड़ियाबहन इतनी मेहनती है कि एक दिन में 500 से अधिक मास्क सीलकर तैयार कर लेती हैं।

गुड़ियाबहन के पिताजी अब बेटियों को बहुत ही प्यार

करते हैं। उन्हें इस बात का बहुत अफसोस है कि उन्होंने उनकी शादी इतनी छोटी सी उम्र में करके गलती की थी।

इस तरह 'सेवा' लगातार प्रयत्न कर रही है कि हमारी सदस्य बहनों को किसी न किसी तरह काम दिलवाया जाये ताकि वे अपने घर-परिवार का भरण-पोषण ठीक तरह से कर पाएँ।

-अंजनाबहन,
ऑर्गनाइजर

मुश्किल समय में छोटी-सी मदद काम आई...

दिल्ली में 19 अप्रैल से लॉकडाउन घोषित किया गया। लेकिन जैसे ही लॉकडाउन लगा, लोगों की रोजी-रोटी की समस्या उत्पन्न हो गई। उनकी इस परेशानी को मद्देनज़र रखते हुए निर्माण मजदूर कामगार बोर्ड के ऊपर दबाव बनाया गया जिसके परिणामस्वरूप सबसे पहले निर्माण मजदूर बोर्ड की तरफ से सहायता मिली।

इसके अंतर्गत 19 अप्रैल तक जितने भी निर्माण मजदूर रजिस्टर्ड थे उन सभी के बैंक खातों में बोर्ड द्वारा कोविड -19 के चलते 5,000 रुपये की सहायता राशि दी जमा करवा दी गई। इसके साथ-साथ सरकार ने भी यह भी किया कि सरकारी अस्पताल में मजदूरी कार्ड दिखाकर वे नि:शुल्क अपना इलाज करा सकते हैं। इस तरह 5,000 रुपये की राशि 172,000 लोगों के खाते में आ गई है।

दिल्ली में कोरोना महामारी में बहनें बहुत परेशान हो गई हैं। इन बहनों के घर में आर्थिक तंगी के साथ यदि परिवार में कोई कोरोनाग्रस्त हो जाये तो उन्हें लगता है कि अब इस कठिनाई से उबरने का कोई रास्ता है या नहीं, वे क्या करें क्या न करें, की स्थिति में पड़ जाते हैं।

जहांपुरी क्षेत्र में गुरदीप कौर और उनके परिवार को जब पता चला कि उनके पूरे परिवार को कोरोना हो गया तो वे बहुत परेशान हो गईं। पहले ही घर में लॉकडाउन की वजह से तंगी थी और फिर इस बीमारी की मार ने उन्हें बहुत परेशान कर दिया। कोरोना की वजह से कोई पड़ोसी भी मदद को आगे नहीं आया। तब 'सेवा' की एक आगेवान बहन से जानकारी मिली तो उम्मीद नजर आई उन्होंने अपने घर की हालत बताई। तब आगेवानबहन ने 'सेवा' के स्टाफ के साथ मिलकर राशन और सब्जी की मदद उनके घर तक पहुँचाई। गुरदीप कौर को इस मदद

से थोड़ी राहत मिली। मुश्किल समय में छोटी-सी मदद भी हमारा हौसला बढ़ा देती है। गुरदीप कौर के परिवार को बहुत सहारा मिला।

जब कोई इस बीमारी की वजह से मिलना या बात करना भी नहीं चाहता है तब 'सेवा' की बहनें लगातार फोन पर अपनी सदस्य बहनों के हालात का पता कर रही हैं। इतना ही नहीं, बीमारी में क्या करना है, कैसे सबका ख्याल रखना है, यह सब जानकारी फोन पर ही डॉक्टर से बात करवाकर दिलवाई जा रही है।

थोड़ी-सी जागरूकता से गुरदीप कौर का परिवार कोरोना से जंग जीत गया और सभी लोगों की रिपोर्ट निगेटिव आ गई। 'सेवा' की मदद से मुश्किल समय आसानी से कट गया। गुरदीप कौर 'सेवा' की बहुत आभारी हैं। गुरदीप कौर जैसे ही अन्य श्रमजीवी कामगारों के लिए 'सेवा' द्वारा सरकार से और भी मांगें की गईं और इस संबंध में 'सेवा' द्वारा सरकार को पत्र लिखा है और हम चाहते हैं कि सरकार उन पर जल्दी से काम करें हालाँकि इसमें कुछ बिंदुओं पर सरकार ने काम भी किया है। श्रममंत्रीजी और प्रधानमंत्री को लिखे गए पत्र इस प्रकार हैं:

सेवा में,

माननीय श्रममंत्रीजी,
दिल्ली बिल्डिंग एंड अदर
कंस्ट्रक्शन वर्कर वेलफेयर बोर्ड दिल्ली।

दिल्ली में जिस प्रकार से कोविड महामारी का दौर चल रहा है। हालात बद बदतर बनते चले जा रहे हैं। इसमें किसी भी प्रकार का वर्ग अछूता नहीं है। इसमें मान्यवर जी सबसे पहले आपका तहेदिल से शुक्रिया, जिन्होंने निर्माण मजदूर कामगारों के बारे में थोड़ा सोचा और इसके अंतर्गत रजिस्टर्ड निर्माण कामगारों को पांच हजार राशि देकर सहायता की।

लेकिन जैसा कि हम सभी जानते हैं कि 19 अप्रैल 2021 से दिल्ली में लॉकडाउन घोषित किया गया लेकिन यह सहायता राशि सभी निर्माण मजदूरों को नहीं मिल पा रही है क्योंकि जिन लोगों ने ऑनलाइन आवेदन किए हैं और उनका वेरिफिकेशन नहीं हो पाया है ऐसे लगभग 50,000 मजदूर अभी बाकी हैं।

तो ऐसे सभी निर्माण मजदूर जो कि 19 अप्रैल 2021 तक अपने आवेदन ऑनलाइन सबमिट करा चुके हैं बेशक उनका वेरिफिकेशन नहीं हुआ है लेकिन वह सब भी इस सहायता राशि के हकदार हैं। आप से गुजारिश है कि आप जल्द ही उन लोगों का वेरिफिकेशन का सिस्टम बनवाएँ ताकि ऐसे निर्माण मजदूरों तक यह राशि जल्दी से जल्दी पहुँच सके।

श्रम विभाग द्वारा घोषणा की गई कि कोरोना महामारी में निर्माण श्रमिक अगर पॉजीटिव हैं तो उनको 5000 रुपये से 10,000 रुपये तक की सहायता राशि दी जाएगी। लेकिन मान्यवर जी, अभी तक यह राशि एक भी निर्माण मजदूर को नहीं मिली है और यह भी स्पष्ट नहीं है कि अगर यह राशि प्राप्त करनी है तो उस राशि को प्राप्त करने के लिए क्या दस्तावेज और कहां जमा करने होंगे यानि की यह राशि कैसे ली जानी है। कृपया इस स्कीम को घोषित करने

से पहले उसको लेने के तरीके पर भी लोगों को जानकारी देना बेहद जरूरी है क्योंकि अभी तक एक भी कोरोना पॉजीटिव निर्माण श्रमिक को इसका फायदा नहीं मिला है।

आपसे प्रार्थना है कि उक्त दोनों बिंदुओं पर तुरंत उचित कार्यवाही करते हुए लोगों का मार्गदर्शन करें।

लताबेन,
उपाध्यक्ष,
'सेवा' दिल्ली युनियन

● ● ●

माननीय प्रधानमंत्री जी

विषय : कोरोना काल में असंगठित क्षेत्र की बदहाली।

सेवा-स्वाश्रयी महिला सेवा संघ, असंगठित क्षेत्र की श्रमजीवी महिला कामगारों के साथ काम करती है।

कोरोना महामारी के समय में सभी प्रकार के काम बंद हैं। आज कोरोना महामारी के कारण एक तरफ तो लोग अपने घरों में बंद बिना काम के बैठे हुए हैं। इस महामारी की जंग में उससे मुकाबला कर रहे हैं इसलिए प्रधानमंत्री जी हम आपका ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं :

1- पिछले साल कोरोना के समय जब आपने रेहड़ी-पटरी वालों के लिए पीएम सवनिधि स्कीम निकाली थी जिसमें कि 10,000 रुपये का लोन एक रेहड़ी-पटरी विक्रेता को मिलना था पर लोगों के हालात नहीं सुधरे। लोग अपने काम को बढ़ाने में कुछ आगे ही बड़े थे कि फिर से वे वहीं खड़े हो गए जहाँ वे अब से पहले खड़े थे। हम चाहते हैं कि पीएम सवनिधि के तहत रेहड़ी-पटरी वालों को दिया गया लोन राशि या तो अभी लेनी बंद की जाए या फिर माफ की जाए।

2- जन-धन योजना के तहत हर एक महिला के खाते में कम से कम 2500-3000 रुपए मासिक डाले जाएँ।

3- इसके अलावा वन नेशन वन राशन स्कीम के तहत अपने राशन पर हर जगह पूरे भारत में कहीं पर भी वह सुविधा ले सकें।

4- केंद्र सरकार की तरफ से एक व्यक्ति पर 5 किलो राशन फ्री मुहैया कराया जाए।

5- इसके अलावा, प्रत्येक परिवार को स्वास्थ्य किट, रोजमर्रा की जरूरतों की चीजों आदि पर ध्यान देना भी सरकार की जिम्मेदारी है।

6- अस्पताल में बेड, ऑक्सीजन का पर्याप्त इंतजाम किया जाए।

7- कोरोना से मौत की स्थिति में मृतक के परिवार को सरकार की तरफ से मुआवजा दिया जाए।

8- प्रवासी मजदूरों को पका हुआ खाना दिया जाए और पिछले वर्ष की तरह राशन किट दी जाए।

9- असंगठित क्षेत्र के मजदूरों के लिए सामाजिक सुरक्षा बोर्ड का जल्द से जल्द गठन किया जाए।

10- दवा व अन्य इलाज के उपकरणों की कालाबाजारी पर रोक लगाई जाए।

लता
सेवा दिल्ली यूनियन

जहांगीरपुरी की फरीदाबहन निर्माण कामगार हैं। वे कोरोना महामारी में लॉकडाउन की वजह से बहुत ही परेशान थीं। उनके 4 बच्चों, उनके पति और स्वयं उनकी स्थिति बहुत दुखदाई हो गई थी। आमदनी का कोई जरिया नहीं था। घर में खर्चा चलाने में बहुत ही परेशानी हो रही थी। किसी से कर्जा लेकर वे घर में राशन लाईं और रोजे में इसी तरह घर चलाया। कुछ दिनों बाद सरकार ने मजदूरों के खाते में 5,000 रुपये की सहायता राशि जमा करने की घोषणा की। इस घोषणा से उन्हें उम्मीद की किरण नजर आई कि कुछ तो परेशानी खत्म होगी। इसके बाद जब उनके खाते में पैसे आये तब उन्होंने अपना कर्जा चुकाया और घर में राशन भी लाईं। मजदूरी की कापी से पैसा मिलने से उन्हें बहुत मदद मिली। उनकी कापी 'सेवा' से कुछ दिनों पहले ही रिन्यू कराई थी जिसके कारण पैसा आसानी से बैंक में आ गया। सरकार ने उन जैसे कई श्रमिकों की मदद की जिसके कारण उनका दिल्ली में रहकर जीना आसान है अन्यथा तो लॉकडाउन के कारण वापस गांव जाने के अलावा उन्हें कोई और रास्ता नजर ही नहीं आ रहा था।

वंदनाबहन,
आगेवान-जहांगीरपुरी

सेवा झारखंड

वैक्सीन के प्रति जागरूक किया

अभी जिस तरह बीमारी की दूसरी लहर हर तरफ फैली है, उसी को ध्यान में रखकर झारखंड में लॉकडाउन लगा हुआ है। इसकी वजह से बहुत सारे काम बंद हैं। हजारीबाग में हमारी सभी बहनें खेती का काम करती हैं। इन बहनों का काम जारी है हालाँकि गर्मियों के मौसम में पानी की कमी के कारण खेती कम होती है। हमारी ये बहनें सब्जियाँ लगाती हैं। अभी हमारे गाँव में बहनें इस बीमारी से वाकिफ थीं लेकिन पिछले दिनों वे सभी सावधानी कम रख रही थीं दरअसल, गाँवों में लोग बीमारी कम सुनते या देखते हैं, यही वजह है कि उनको लगता था कि बीमारी खत्म हो गई है लेकिन दोबारा से लॉकडाउन लग गया और पता चला कि बीमारी फिर से फैल रही है इसलिए अब वे सभी सावधानी पर ध्यान दे रही हैं।

उनमें अभी वैक्सीन के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं है। गाँवों में अभी कैंप के द्वारा वैक्सीन दी जा रही थी जिसमें दो-चार बहनों की तबीयत खराब होने या बुखार आ जाने की वजह से सभी में भ्रम पैदा हो गया था कि वैक्सीन से लोग और बीमार हो जाते है इसलिए हम ये वैक्सीन नहीं लेंगे।

जब हमें इसकी जानकारी मिली तो हमने टीम से बात की और अभी हम लोग हर दिन तीस बहनों से फोन के माध्यम से बातचीत करते हैं। उन्हें बीमारी की जानकारी देकर वैक्सीन लेने के फायदे बता रहे हैं ताकि बहनें वैक्सीन की उपयोगिता को समझें। अभी देखा जा रहा है कि बहनें हमारी बातों को समझ रही हैं और वैक्सीन लेने के लिए तैयार हो रही हैं।

-श्वेता बारा,
डिस्ट्रीक्ट को-ऑर्डिनेटर, हजारीबाग

पशुसखी बहनों की आय में कमी आई है...

कोरोना - एक वैश्विक महामारी, जिससे पूरी दुनिया जूझ रही है। इस भयंकर महामारी ने पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था को उलट-पलट कर दिया है। हर जगह तबाही मची हुई है। अभी फिलहाल कोरोना से बचाव का एक मात्र उपाय टीकाकरण है क्योंकि टीकाकरण के बाद भी अगर कोरोना का संक्रमण हो जाता है तो लोग जल्दी ही ठीक हो रहे हैं। इसके अलावा सावधानी ही इसका एक बचाव है। 'सेवा' मुंगेर के क्षेत्र में भी कोरोना वायरस बुरी तरह फैल गया है। लोगों में इस वायरस का इतना भय समाया हुआ कि लोग भी बाहर जाने से परहेज कर रहे हैं। कोई दिक्कत होने पर घर में ही क्वारेंटाइन हो रहे हैं।

इस महामारी से हमारी 'सेवा' की बहनों के जीवन पर बहुत खराब प्रभाव पड़ रहा है। बकरी पालन में पशुसखी बहनों को 'सेवा' द्वारा प्राथमिक इलाज की ट्रेनिंग दी गई थी जिससे वे बकरी का प्राथमिक इलाज कर कुछ आय प्राप्त करती हैं। लेकिन इस महामारी के भय से लोग आपस में मिल नहीं रहे है। पशुसखी भी घर से कम ही बाहर जाती हैं इससे उन्हें जो आय प्राप्त होती है उसमें भारी गिरावट आ गई है। जहाँ पशुसखी 2,500 से 3,000 रुपये कमाकर अपने घर में मदद करती थीं अब उनकी आय 1,000 रुपये हो गई और पति का काम भी बंद हो गया है।

स्वर्णलता बहन पशुसखी हैं जो श्रीमतपुर पंचायत के रामपुर गाँव की रहने वाली हैं। उनका कहना है कि बकरी की स्थिति बहुत खराब होती है तभी बहन इलाज के लिए

आती है। फोन से ही बात करके इलाज हो रहा है, इससे उनकी आय में बहुत कमी आई है। लेकिन ***एक अच्छी बात यह है कि उन्हें 'सेवा' के द्वारा मास्क सिलने का काम दिया गया है तो इससे उन्हें मदद मिली है।***

कौशल्याबहन मोहली पंचायत के मोहली गाँव की रहने वाली हैं। उन्होंने बताया कि उनके पति का काम छूट गया है और बकरी के इलाज में कमी के कारण उनकी आय में भी कमी आई है।

'सेवा' के द्वारा हम पशुसखी बहनों को फोन द्वारा जागरूक कर रहे हैं कि आप सभी मास्क पहनें, सोशल डिस्टेंस रखें, बहुत जरूरत हो तभी निकलें। हमने बहनों को डॉक्टरों के फोन नंबर, ऑक्सीजन सप्लायर के नंबर भेज दिये हैं ताकि जरूरत पड़ने पर वे उनसे संपर्क कर पाएँ। सभी बहनों को टीकाकरण की सलाह दे रहे हैं।

'सेवा' की अलग-अलग क्षेत्रों की बहनों से बातचीत से पता चल रहा है कि उनका जीवन बहुत प्रभावित है। बहुत परेशानी आ रही है। कोई किसी की मदद नहीं कर पा रहा है। प्रशासन भी पहले की तरह कोई ध्यान नहीं दे रहा है। लेकिन लोग जागरूक हुए हैं, खुद भीड़ से अलग रहते हैं, आपस में मिलना-जुलना कम कर रहे हैं। हम भी प्रयत्न कर रहे हैं कि हमारी सभी बहनें स्वस्थ रहें और हम उन्हें कोई काम दिलवा पाएँ।

-मायाबहन,
गोट प्रोग्रामर

'अनसूया'

सदस्यता–फार्म

प्रति,

'अनसूया–ट्रस्ट' फोन नं.: 2790039
द्वारा– म.प्र. हिन्दी साहित्य सम्मेलन,
मायाराम सुरजन स्मृति भवन,
पी.एण्ड टी. चौराहा, शास्त्रीनगर,
भोपाल (म.प्र.) 462003

नाम .....
पता .....
.....
.....
..... पिन .....
फोन नं.: .....
मोबाइल नं.: .....
ई–मेल: .....
सदस्यता शुल्क एक वर्ष रु 100/– .....
आजीवन रु 700/– .....
मनीऑर्डर .....
चेक/ड्राफ्ट .....
मैं 'अनसूया' का मासिक अखबार का ..... सदस्य बनना चाहती/चाहता हूँ।
मेरा सदस्यता शुल्क रु ..... मनीऑर्डर/चेक/ड्राफ्ट द्वारा प्रेषित है।

हस्ताक्षर

(कृपया सदस्यता शुल्क 'अनसूया ट्रस्ट' के नाम पर ही भेजें।)

आपकी आवाज़

'अनसूया' आपका अपना अख़बार

'अनसूया' अखबार का 36वाँ वर्ष चल रहा है। इसे अपने पाठकों-मित्रों-शुभचिन्तकों का स्नेह मिलता रहा है और आगे भी मिलेगा।

- ढेरों की तादाद में प्रकाशित होने वाली पत्रिकाओं के बीच स्त्रियों की पतवार बन अपने लिए एक निश्चित जगह बनाने वाली ''अनसूया'' का 36वाँ वर्ष चल रहा है।
- एक सूत से श्रमजीवी महिलाओं के साथ समूचे महिला विश्व को बाँधने को उदग्र 'अनसूया' का पाठक वर्ग सभी वर्गों को अपने में समाए हुए है।
- अहमदाबाद से बढ़कर 'सेवा' गुजरात, भारत तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विकसित हो रही है। तब उसके मुखपत्र 'अनसूया' के फलक की व्याप्ति भी बढ़ी है।
- राष्ट्र विकास के महिला संयोजन में लगातार संलग्न 'अनसूया' स्त्रियों के प्रति होने वाले अन्याय एवं शोषण के खिलाफ संगठित होने के लिए प्रयत्नशील है।

स्त्रियों को आत्मनिर्भर, आत्मवान बनाने की दिशा में 'अनसूया' की एक निश्चित भूमिका रही है। यह अखबार स्त्रियों के लिये प्रेरणास्रोत भी शुरू से रहा है। स्त्रियों को कठिन समय में निर्णय लेने की शक्ति इस अखबार से मिलती रही है।

यह आपका अपना अखबार है। इसे स्वयं भी नियमित पढ़ें और पड़ोसियों, मित्रों तथा नाते-रिश्तेदारों को भी भेंट स्वरूप दें।

'अनसूया' की आजीवन सदस्यता अभी भी सिर्फ 700/- रु. मात्र है और वार्षिक सदस्यता केवल 100/- रु. है।

'अनसूया' हर माह की 1 और 16 तारीख को प्रकाशित होती है।

'अनसूया' कार्यालय,
द्वारा-म.प्र. हिन्दी साहित्य सम्मेलन, मायाराम सुरजन स्मृति भवन,
पी.एण्ड टी. चौराहा,
शास्त्रीनगर, भोपाल(म.प्र.)- 462003

मालिक : ''अनसूया ट्रस्ट'' की ओर से प्रकाशक-मुद्रक : प्रीति शान्त, म.प्र.हिन्दी साहित्य सम्मेलन, पी.एण्ड टी. चौराहा, शास्त्रीनगर, भोपाल (म.प्र.)-462003. फोन : 0755-2790039
मुद्रण : प्रियंका ऑफसेट, प्रेस कॉम्प्लेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल. फोन : 2555789

अनसूया

अनसूया कार्यालय :

द्वारा- म.प्र.हिन्दी साहित्य सम्मेलन,
मायाराम सुरजन स्मृति भवन,पी.एण्ड टी.चौराहा,
शास्त्रीनगर, भोपाल (म.प्र.) 462003 फोन नं. : 2790039

ई-मेल - ansuya_trust@rediffmail.com,
Facebook - ansuya_trust@rediffmail.com